जादुई डॉक्टर

वैल बिरो

जादुई डॉक्टर

वैल बिरो

पुराने समय की बात है. तब एक गरीब मोची रहता था.

उसकी पत्नी बीमार थी इसलिए वो एक डॉक्टर के पास गया.
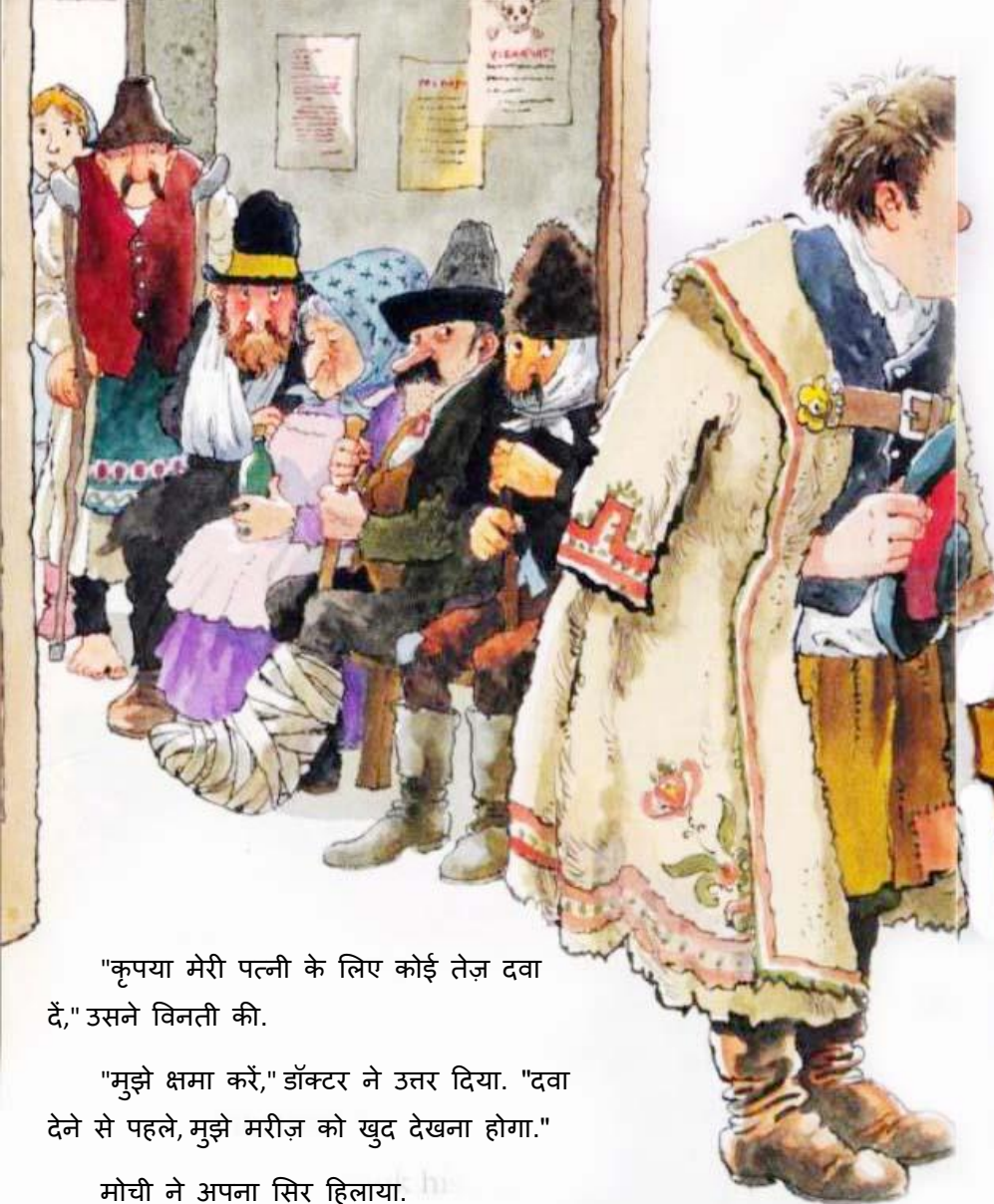
"कृपया मेरी पत्नी के लिए कोई तेज़ दवा दें," उसने विनती की.

"मुझे क्षमा करें," डॉक्टर ने उत्तर दिया. "दवा देने से पहले, मुझे मरीज़ को खुद देखना होगा."

मोची ने अपना सिर हिलाया.

वो डॉक्टर के दवाखाने के बाहर तब तक खड़ा रहा जब तक एक दूसरा मरीज़ बाहर नहीं आया.

फिर मोची ने उस आदमी के नुस्खे की नकल की.

उसकी लिखाई ठीक नहीं थी, क्योंकि मोची पढ़-लिख नहीं सकता था. "मुझे इस नुस्खे की एक गिन्नी कीमत चुकानी पड़ी!" आदमी ने कहा था. "इसलिए तुम्हें भी एक गिन्नी चुकानी पड़ेगी!"

दवाई की दुकान वाला केमिस्ट, मोची की लिखावट पढ़ नहीं पाया.

इसलिए उसने उसे बस थोड़ा सा पुदीने का पानी दे दिया.

पुदीने के पानी की पहली ही घूंट पीने के बाद, मोची की पत्नी को बेहतर महसूस हुआ.

"बहुत अच्छा!" मोची ने सोचा. "अगर लोगों का इलाज करना इतना आसान है, तो फिर मैं भी एक डॉक्टर बन सकता हूँ!"

लेकिन उसे पहले डॉक्टर का सफ़ेद कोट और एक लंबी टोपी खरीदने के लिए कुछ पैसों की ज़रूरत थी.

उसने कहा, "मैं राजा के लिए एक जोड़ी अच्छे जूते बनाऊंगा फिर वो मुझे अच्छा इनाम देंगे."

महल के गेट पर एक गार्ड ने मोची को रोका.

"मैं तुम्हें एक शर्त पर अंदर जाने दूँगा," उसने कहा, "तुम तभी अंदर जाओगे जब तुम मुझे अपना आधा इनाम दोगे."

बेचारे मोची को सहमत होना पड़ा.

आगे जाकर एक नौकर ने मोची को दरवाजे पर रोक लिया.

"मैं तुम्हें अंदर जाने दूँगा," उसने कहा, "तुम तभी अंदर जाओगे जब तुम मुझे अपना आधा इनाम दोगे."

दुबारा मोची को सहमत होना पड़ा.
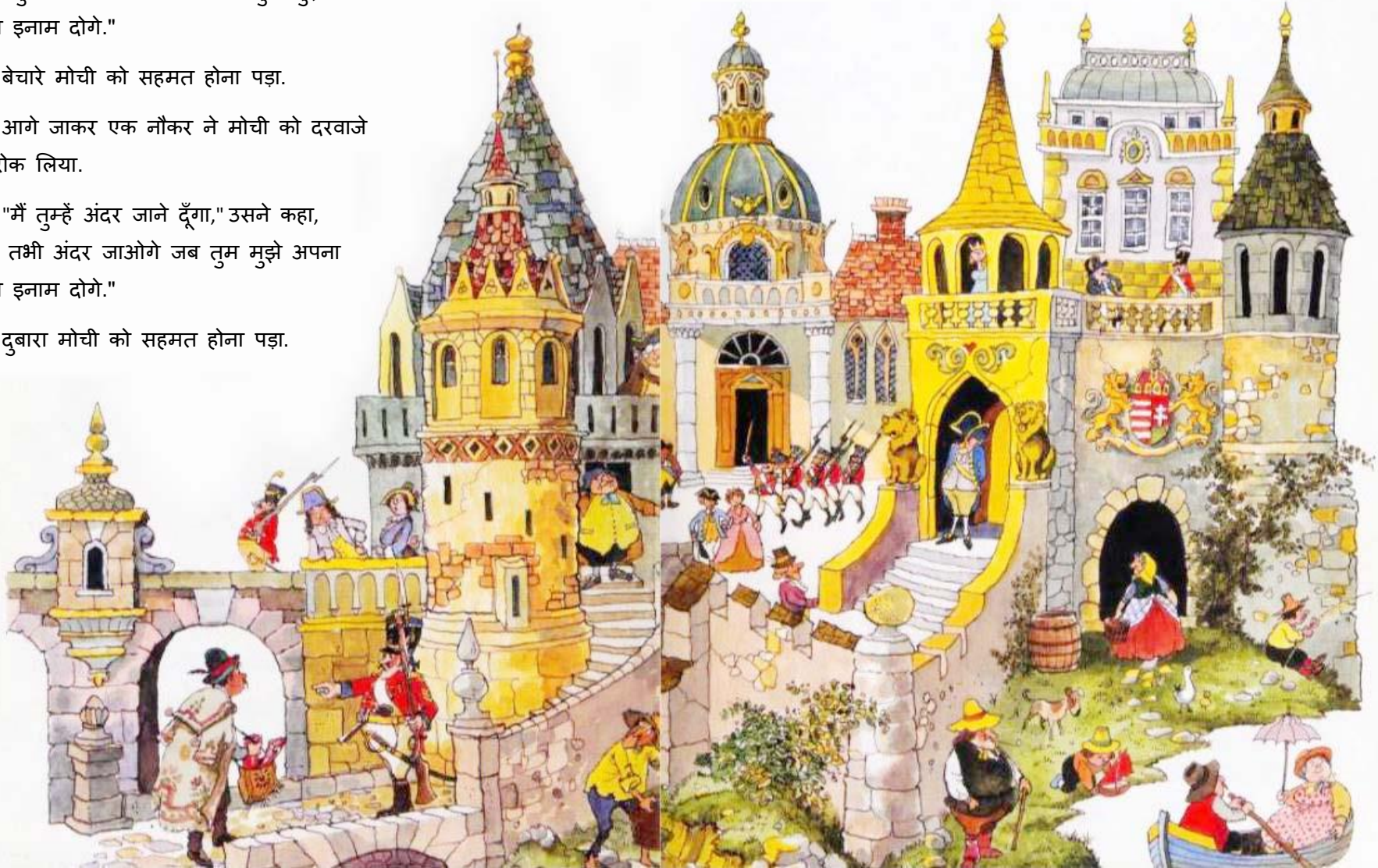
राजा को उसके नये जूते पसंद आये.

"यह रहा तुम्हारा इनाम - एक सौ सोने की गिन्नी!" राजा ने कहा.

लेकिन चतुर मोची ने कहा, "नहीं महाराज पहले आप मुझे सौ कोड़ों का इनाम दें. लेकिन उससे पहले अपने गार्ड और नौकर को बुलायें."
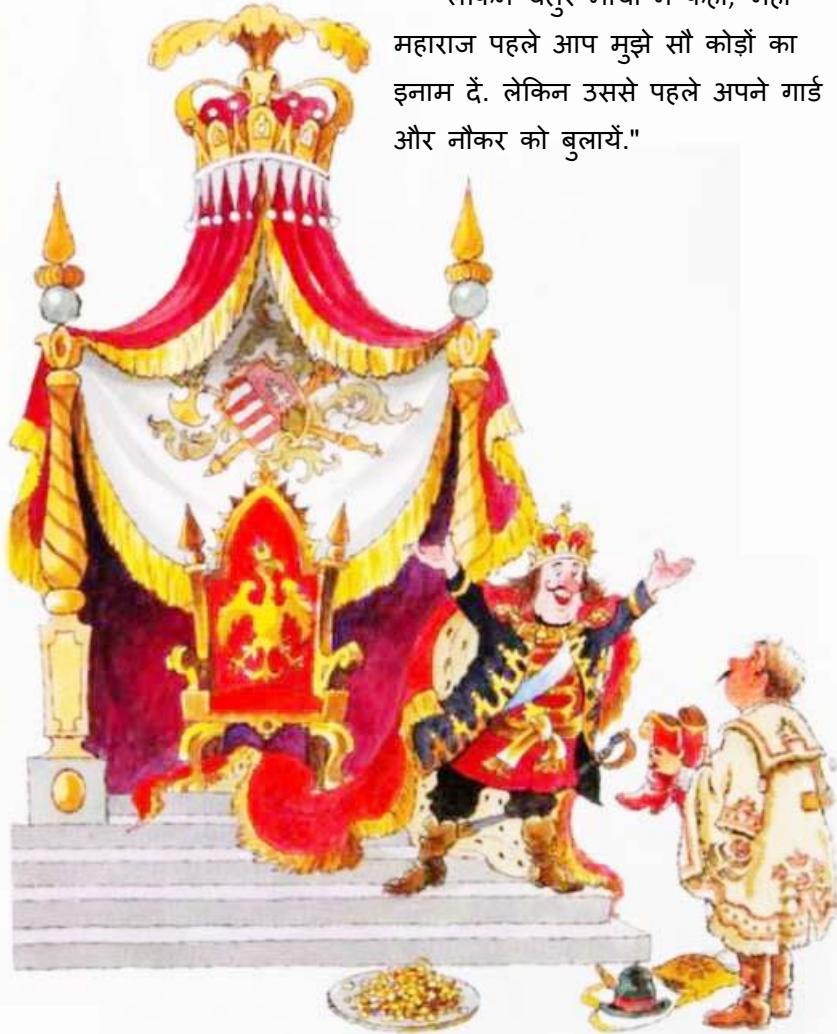
"क्या तुम्हें अब भी मेरा आधा इनाम चाहिए?" मोची ने दुबारा गार्ड और नौकर से पूछा.

"हां ज़रूर!" वे खुश हुए.

इसलिए राजा ने उनमें से प्रत्येक को पचास-पचास कोड़े लगाने का आदेश दिया, और चतुर मोची को दो सौ सोने की गिन्नियाँ दीं!

उसके बाद मोची ने अपना नया कोट और टोपी खरीदी.

अब वो एक डॉक्टर बन गया था!

जब भी कोई मरीज उनसे मिलने आता था तो वो उसे वही नुस्खा लिखकर दे देता था.

निःसंदेह, दवाई वाला केमिस्ट उसकी लिखावट नहीं पढ़ पाता था. इसलिए वो प्रत्येक रोगी को थोड़ा सा पुदीने का पानी दे देता था. पहली घूँट पीने के बाद, हर मरीज़ ठीक हो जाता था!

कुछ दिनों में मोची प्रसिद्ध हो गया और वो "जादुई डॉक्टर" के नाम से जाना जाने लगा.

राजा ने उसे एक दिन बुलवाया. उन्होंने कहा, "लोग कहते हैं कि तुम सब कुछ जानते हो."

"मेरे पास तुम्हारे लिए एक काम है. मेरी बेटी की अंगूठी चोरी हो गई है. उसे ढूंढ निकालो, और फिर मैं तुम्हें अमीर बना दूंगा. लेकिन अगर तुम असफल रहे, तो तुम्हें सुबह को फांसी दे दी जाएगी!"

उस रात, रसोइया, मोची का खाना लेकर आया. लेकिन जब उसने जादुई डॉक्टर का चेहरा देखा, तो वो जल्दी से वापस रसोई में चला गया.
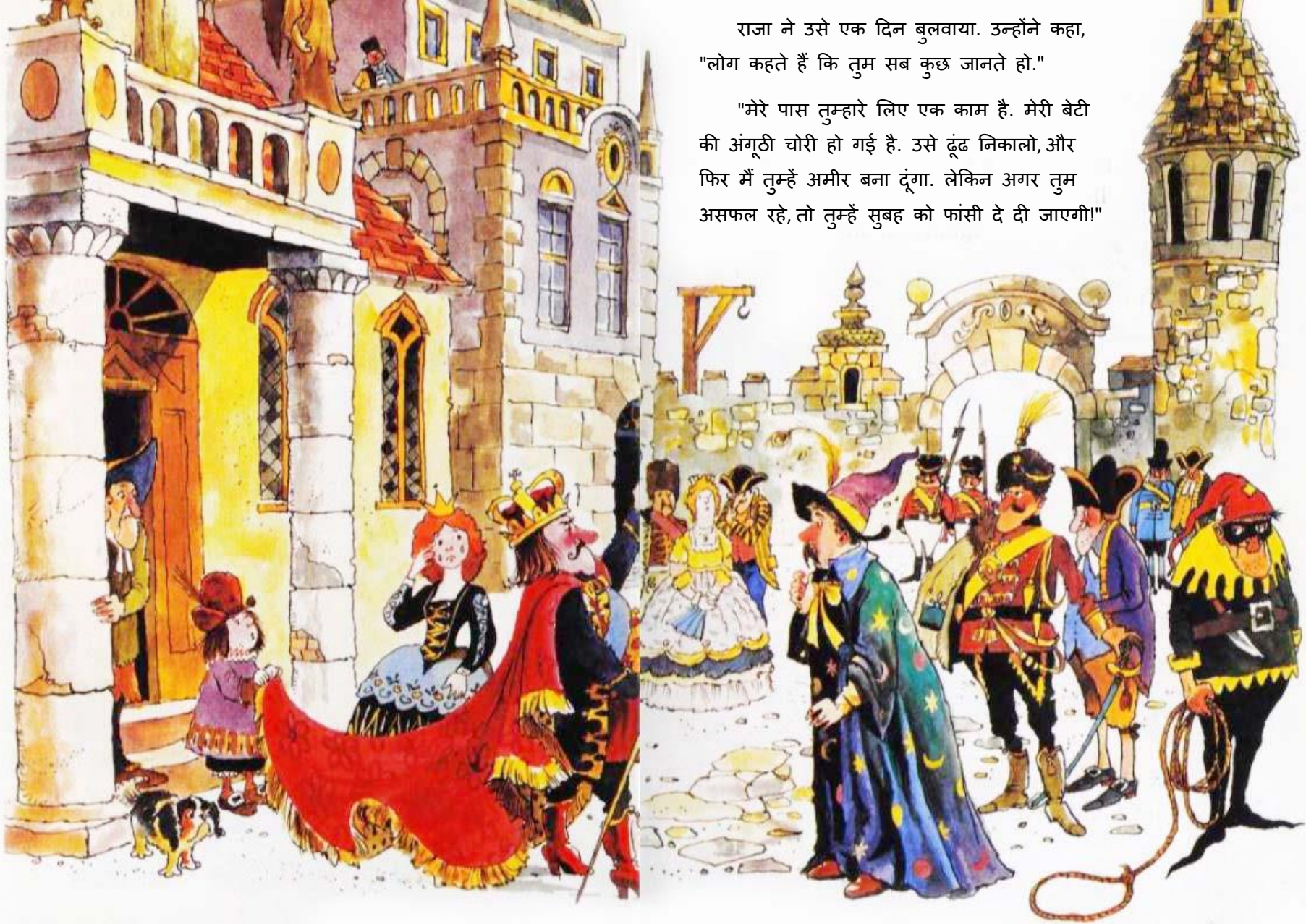
"जादुई डॉक्टर" जानता था कि उसे वो अंगूठी कभी नहीं मिलेगी...

"वो जादुई डॉक्टर है!" उसने अन्य नौकरों को बताया.
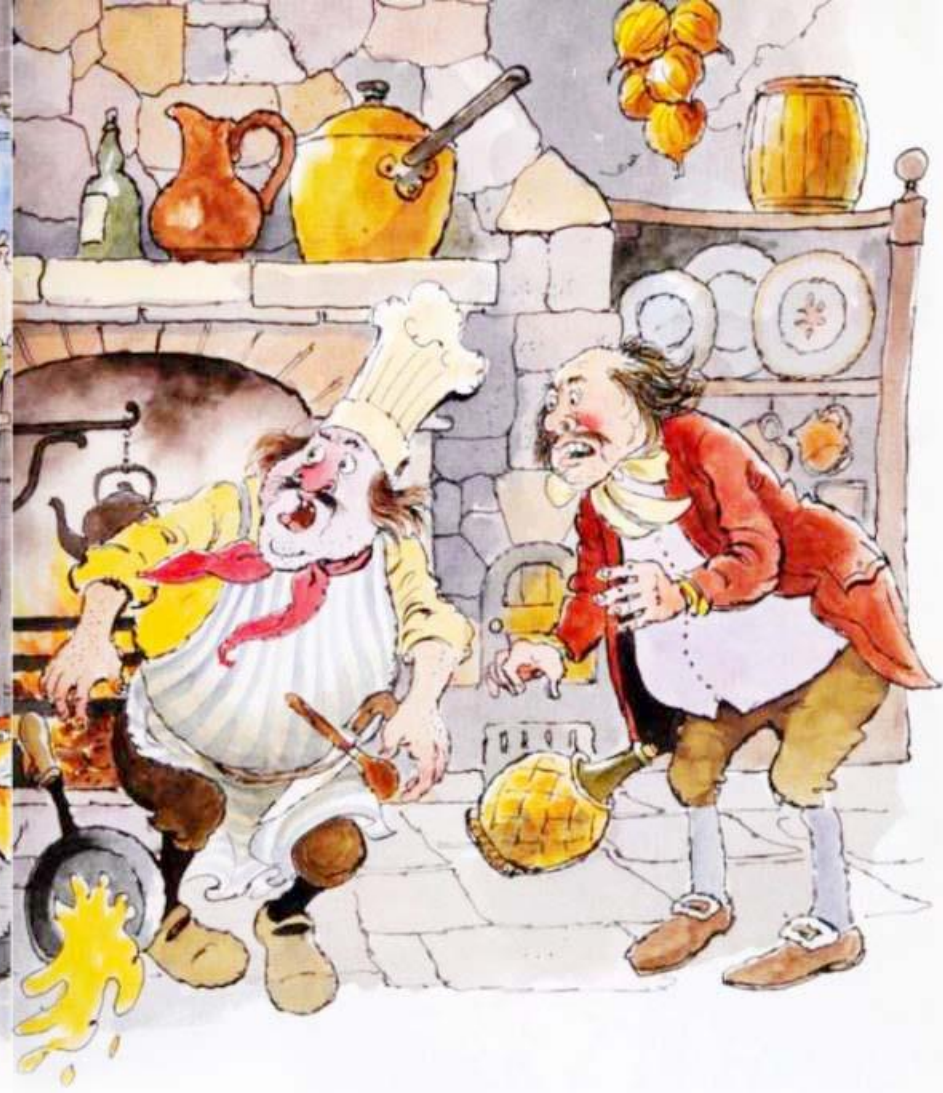
"वो सब कुछ जानता है, और इसलिए उसे
पता होगा कि हम लोगों ने ही अंगूठी चुराई है!"

सभी नौकर जादुई डॉक्टर के पास भागे.

"यह रही वो अंगूठी!" उन्होंने रोते हुए कहा.

"लेकिन कृपया राजा को यह न बताएं कि हमने अंगूठी चुराई थी!"
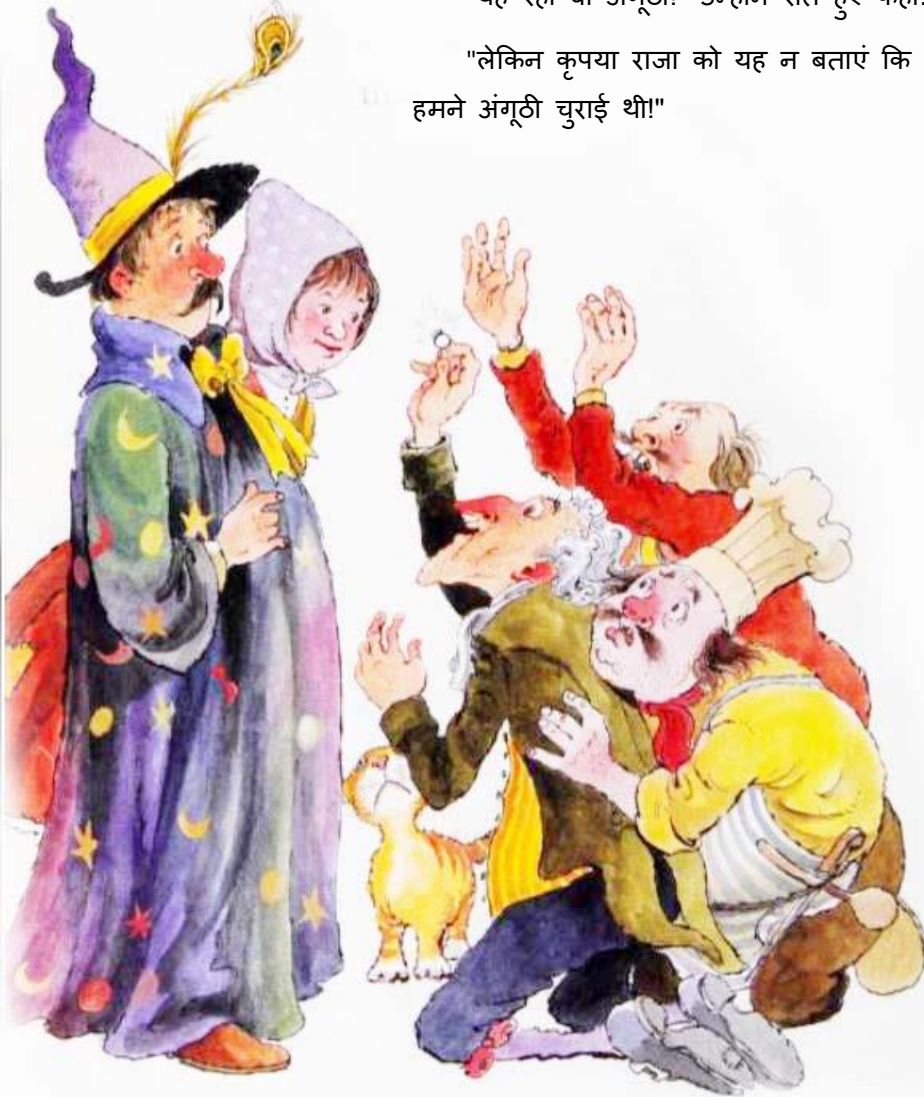
"बहुत अच्छा," जादुई डॉक्टर ने कहा.

"जाओ और मेरे लिए सबसे बड़ी टर्की लेकर आओ"

और उसने अंगूठी टर्की के गले से नीचे गिरा दी.

अगली सुबह, राजा ने जादुई डॉक्टर को बुलाया.

"क्या तुम्हें अंगूठी मिली?" राजा ने पूछा.

सभी ने जादुई डॉक्टर की ओर देखा.
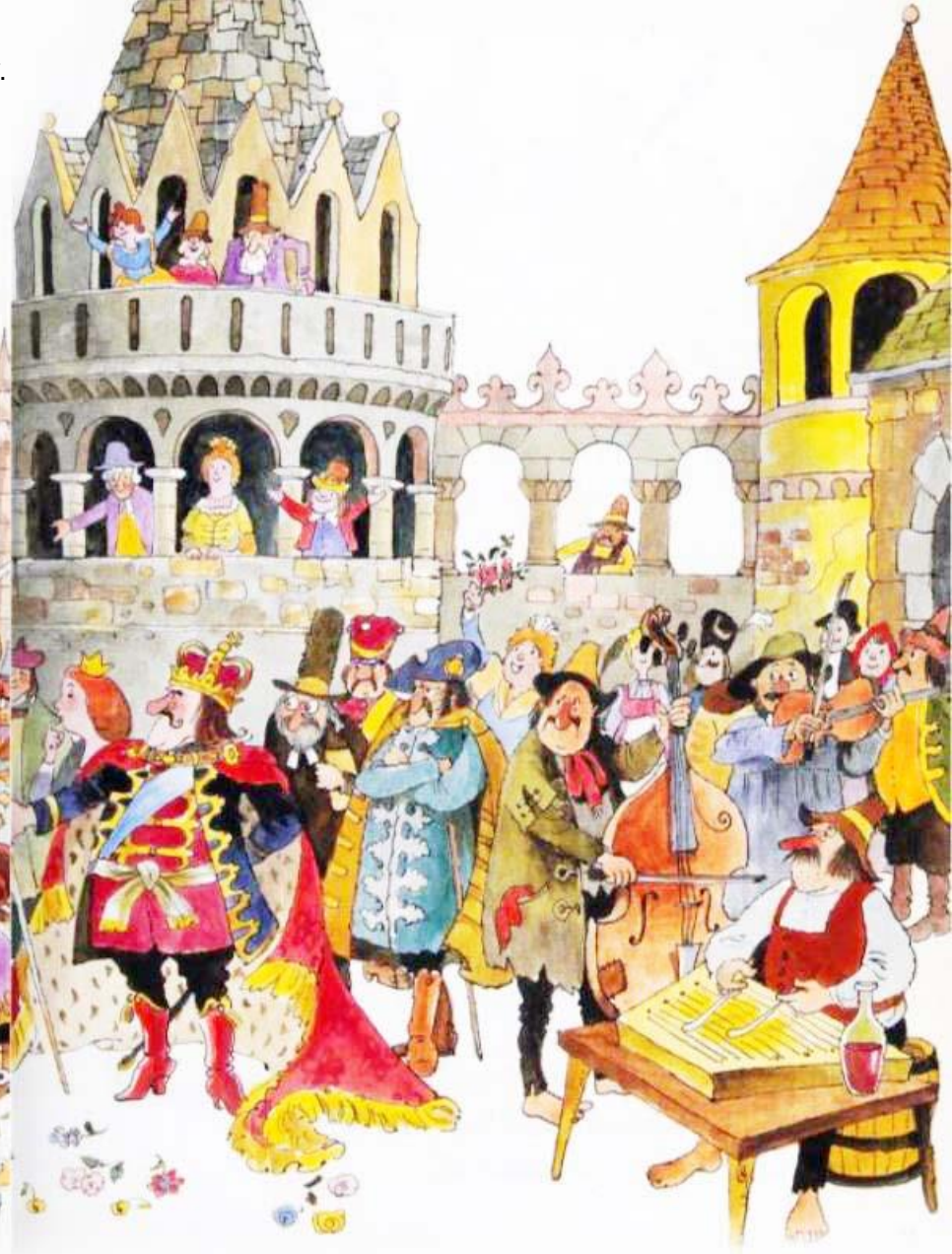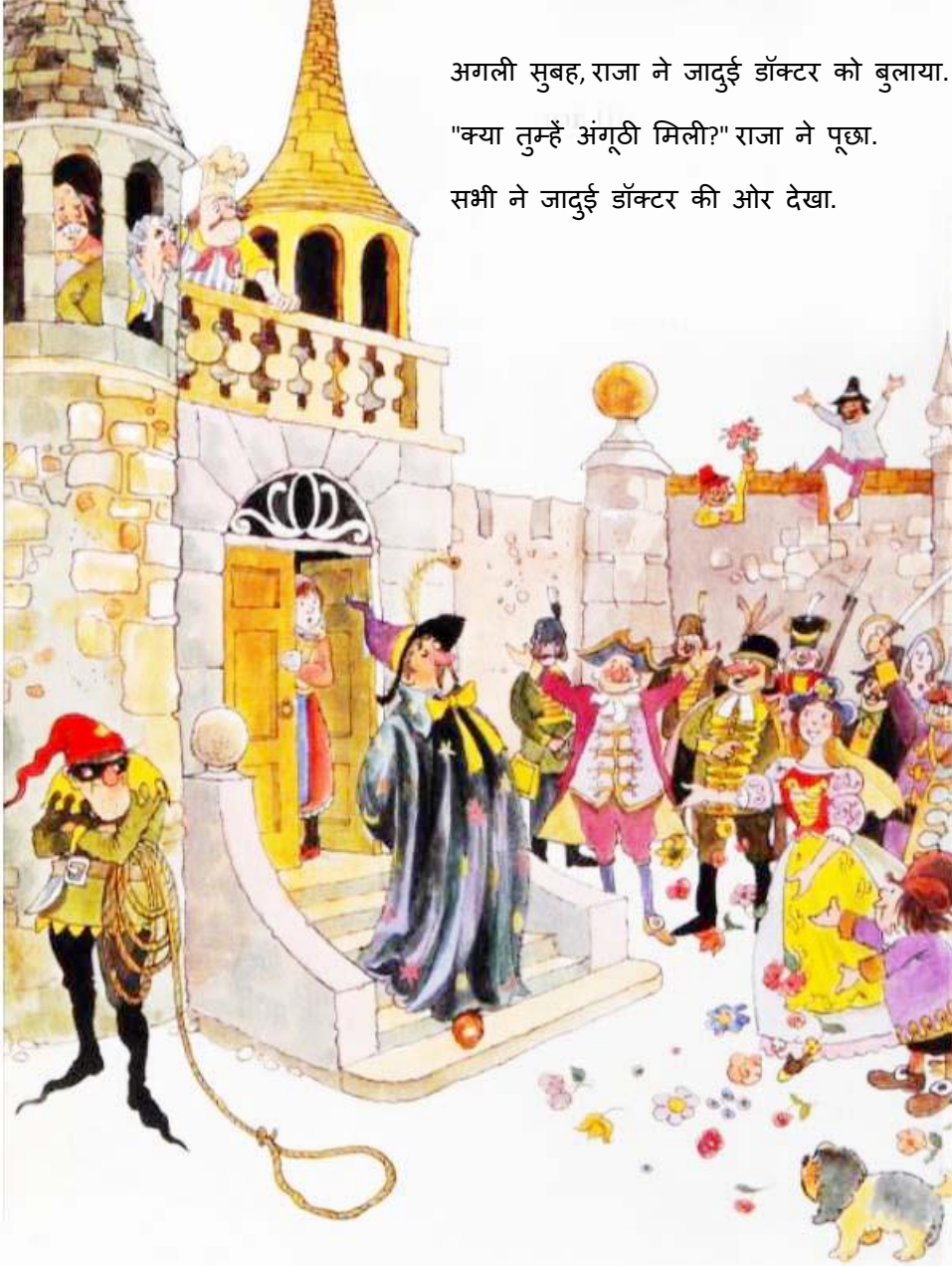
जादुई डॉक्टर ने उत्तर दिया, "मेरे पास अंगूठी नहीं है, लेकिन मुझे पता है कि वो कहां है."

"कृपया अपने जानवरों को बुलाएँ."

फिर राजा ने अपने सेवकों को सभी जानवरों को जादुई डॉक्टर के पास लाने का आदेश दिया.

जादुई डॉक्टर ने प्रत्येक जानवर को ध्यान से देखा. जब वह सबसे बड़ी टर्की के पास पहुंचा, तो उसने कहा, "यही चोर है! रसोइये को इस पक्षी के अंदर अंगूठी मिल जाएगी!"
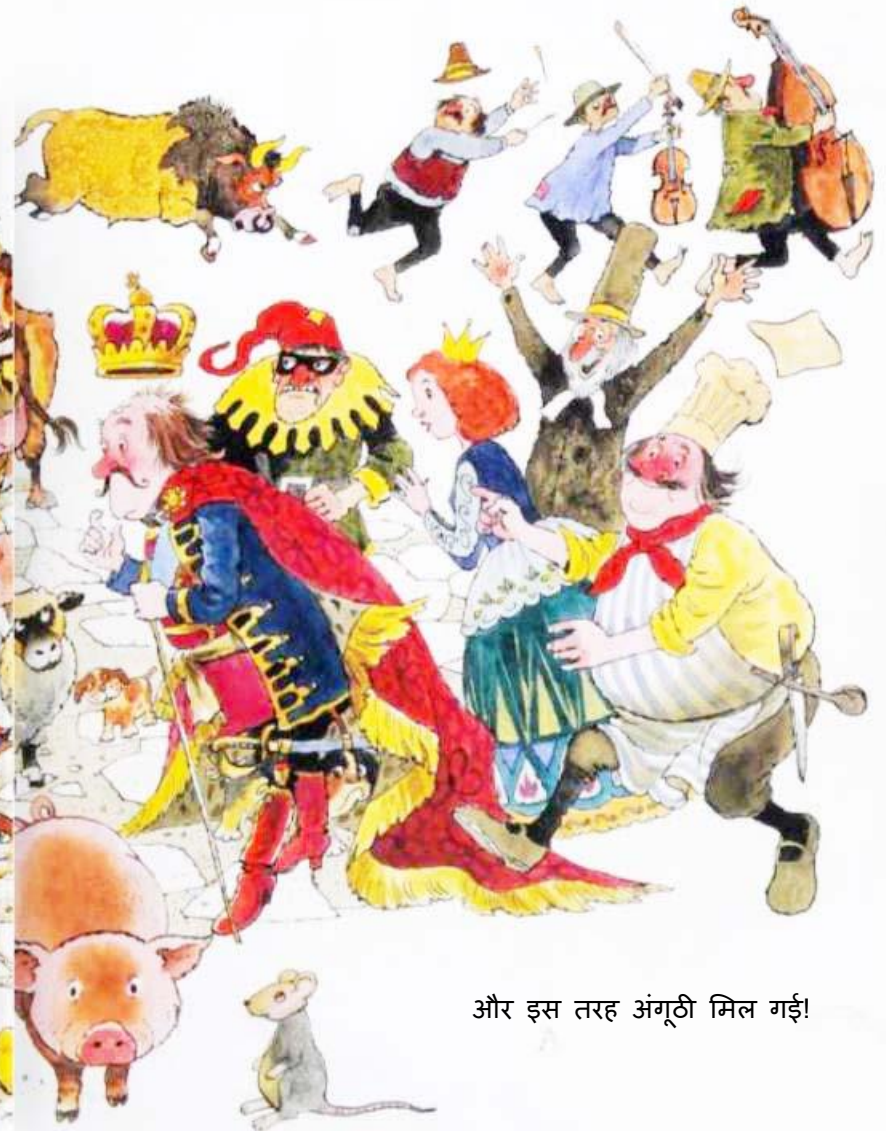
और इस तरह अंगूठी मिल गई!

जादुई डॉक्टर एक सुनहरी गाड़ी में अपने घर वापिस गया. लेकिन वो खुश नहीं था.
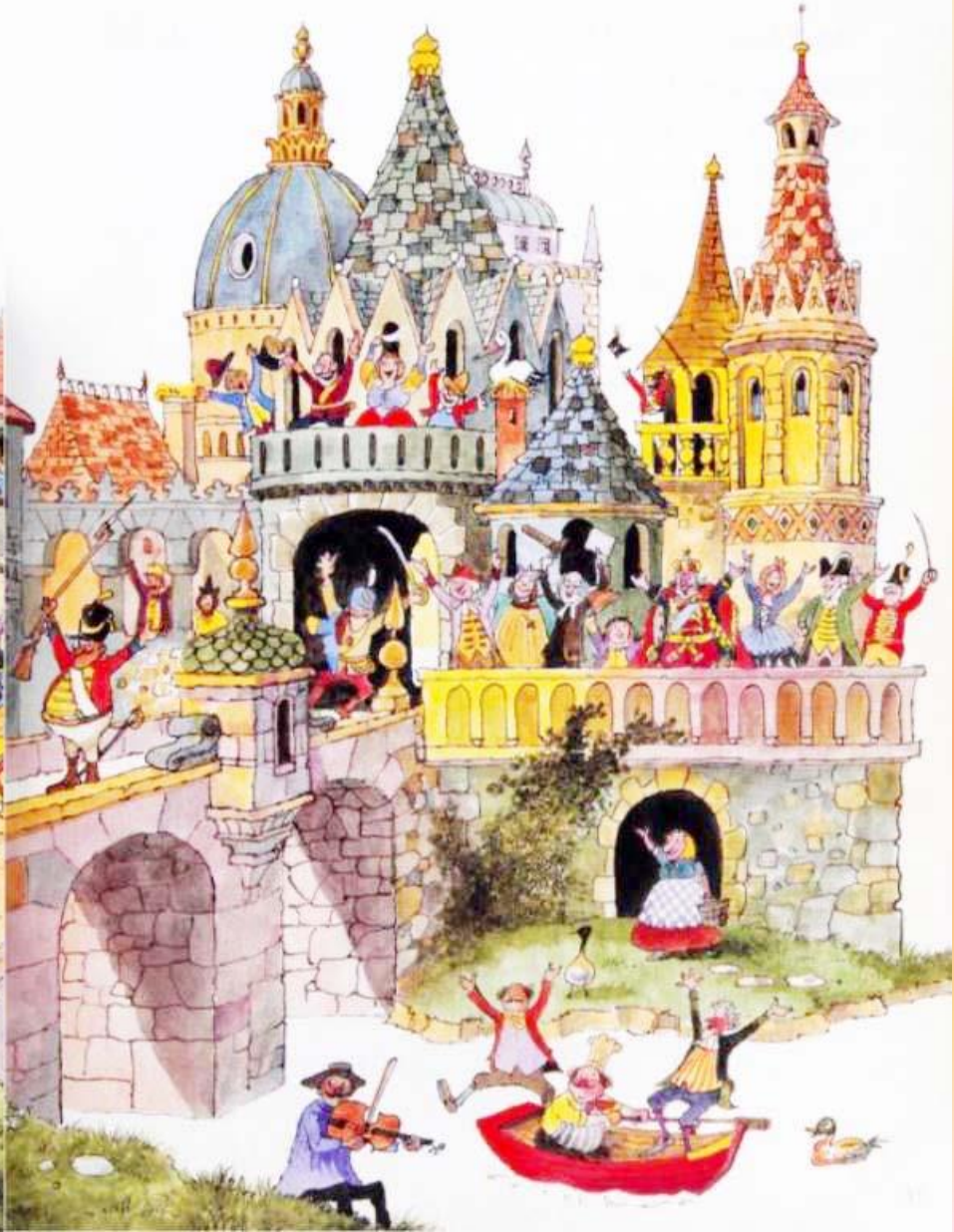
घर वापस आकर, जादुई डॉक्टर ने कहा, "मैंने बहुत सारा पैसा कमाया है. लेकिन मैं वास्तव में मैं कोई जादू नहीं जानता हूँ! मैं अब और अधिक दिखावा नहीं करना चाहता हूँ. मैं अब अपनी दौलत छोड़कर पुराने ज़माने की ज़िंदगी बसर करना चाहता हूँ."

और इस तरह जादुई डॉक्टर एक बार फिर एक ईमानदार मोची बन गया, और फिर वो हमेशा खुश रहा.

अंत